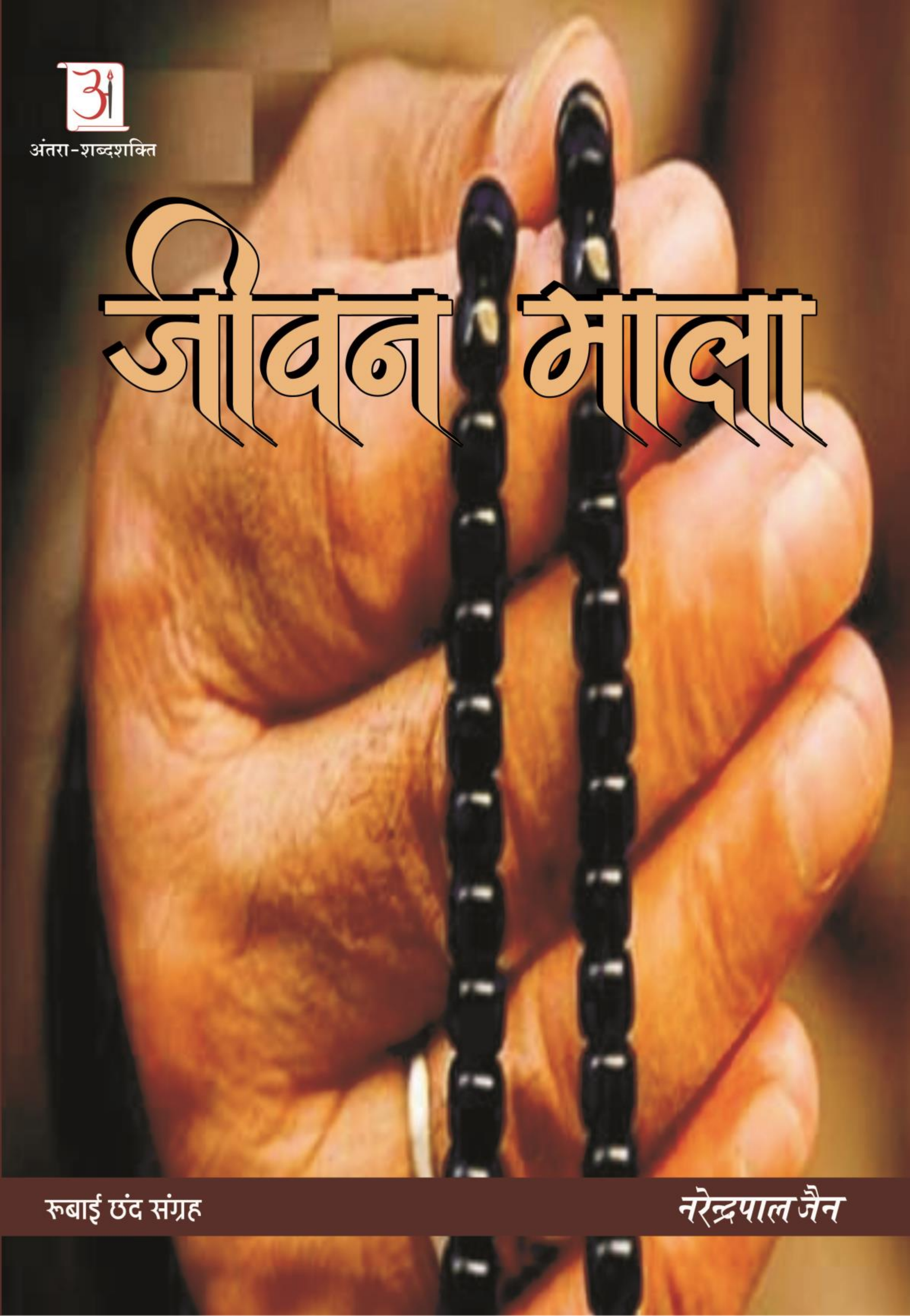

अंतरा-शब्दशक्ति

जीवन माला

रूबाई छंद संग्रह

नरेन्द्रपाल जैन

जीवन माला

(रूबाई छंद संग्रह)

नरेंद्रपाल जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-44-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट म.प्र। ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर म.प्र.। ४५२००१
दूरभाष- कार्या.। ०७६३३-२५३१५९ मो। ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - नरेंद्रपाल जैन
मूल्य - ४०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Jeevan Mala by Narendra Pal

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रेरणा

प्रस्तुत "जीवन माला" लिखने की प्रेरणा आदरणीय हरिवंशराय बच्चन साहब की "मधुशाला" पढ़ने-सुनने से मिली। इसे रुबाई में लिखा है, जिसका दूसरा नाम मधुशाला छंद भी है।

इस छंद में चार पद होते हैं, प्रत्येक पद के 16, 14 वर्णों पर यति एवं अंत 2 गुरु से होता है। प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पदों में समतुकांत होते हैं।

इस "जीवन माला" काव्य संग्रह में जीवन की क्षणभंगुरता के मूल भावों को लेकर अहंकार, क्रोध, मायाचारी आदि के परिणामों एवं मनुष्य को उनसे दूर रहने का आग्रह मात्र है।

कवि हृदय को आप जानते ही हैं, एक बार भावों का ज़्वार उमड़ जाता है और उसमें अनवरत लिखें तो स्वतः ही शब्द संयोजन होकर रचना बन जाती है। इसी तरह माँ सरस्वती की कृपा से प्रस्तुत छंद 5 दिनों की अनवरत साधना से सफलता मिली है। अपनी अल्पबुद्धि से इस पर कलम चलाने का प्रयास किया है।

अन्तरा शब्द शक्ति समूह और मातृभाषा उन्नयन संस्थान की लघु पुस्तिकाओं के प्रकाशन की अनवरत कड़ी में मेरी काव्य कृति का सम्मिलित होना मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

अपने माता-पिता के चरणों में समर्पित।

नरेंद्रपाल जैन

रूबाई/मधुशाला छंद

मातु पितृ के अंश से निर्मित, रूप नया रचने वाला,
कर्म विधाता लिए लेखनी, मानव तन है लिख डाला,
सागर ने उथले ज्यों मोती, बिखरे- बिखरे मंथन में,
एक-एक कर सूत्र पिरोये, बनी नई जीवन माला ।1।

पूर्ण हुआ जब गर्भकाल तब, जनमा वह मरनेवाला,
कष्ट सहे आते ही जग में, कहता है रोनेवाला,
जब खोली आँखें तो पाया, अनदेखा सब अनजाना,
लाख चौरासी में फिर बाँधी, कर्मों ने जीवन माला ।2।

नए जुड़े सब रिश्ते नाते, नई खुली है हर शाला,
चलना खाना बोलना सीखा, साँचे में खुद को ढाला,
नहीं विगत है आगत जाने, रात नई औ उजियाला,
समय चक्र में गूँथ रही है, एक नई जीवन माला ।3।

गिर-गिरकर फिर भरता है डग, पथ पर वह चलने वाला,
नित्य नए पथ भटकाएंगे, क्या जाने भोलाभाला,
कुछ सच्चे कुछ कच्चे धागे, उलझायेंगे जब उसको,
अरे! समझकर उसे सजाना, तू अपनी जीवन माला ।4।

यौवन की दहलीज कदम धर, मस्त हुआ वह मतवाला,
उजले वस्त्रों पर अपने वह, दाग लगा बैठा काला,
ये जग भ्रमित करेगा तुझको, देख-देख चलना होगा,
है अनमोल बचाये रखना, साँसों की जीवन माला ।5।

कर्मों ने ही बाँधा खोला, अपनी किस्मत का ताला,
कोई पलना स्वर्णभरा था, कहीं बाँस में है पाला,
अपनी-अपनी करनी जग में, अपना भाग्य समय लेखा,
कैसे मोती हिस्से आये, देख ज़रा जीवन माला ।6।

खूब कमाई धन औ दौलत, नाम किया ऊँचा आला,
काम क्रोध मद मम से उपजे, पाप घड़ा भी भर डाला,
किन्तु अपने पुण्य की पूँजी, जमा नहीं वह कर पाया,
आभा से अब हुई मलिन है, उसके जीवन की माला ।7।

ईर्ष्या की अग्नि में जल गई, बुद्धि विवेकी गुण माला,
अपना धन अपना माना है, पर धन का भी मतवाला,
लोभ नहीं मिटता है उसका, द्रोपदी चीर हुआ मानो,
गाँठों में उलझाई उसने, अपनी यह जीवन माला ।8।

पथरीले जीवन के पथ में, कर बैठा पग में छाला,
आंखों पर है अहंकार का, पर्दा उसने है डाला,
ठोकर खाकर गिरा पथिक वह, फिर भी सम्भल नहीं पाया,
दोषों में धूसरित हुई है, उजली वह जीवन माला ।9।

समय ढला सँग उम्र ढली जब, खुद को देखा औ भाला,
प्यास बुझी न भूख है मिटती, तृष्णा की जलती ज्वाला,
पावक में घृत डाल डालकर, खुद को भस्मित करता है,
देख कहीं फिर भस्म न होवे, शुद्ध हेम जीवन माला ।10।

अमृत मान है खूब पिया ये, माया के विष का प्याला,
खुद ही चोरी करता है और, खुद बनता है रखवाला,
कौन तुझे है देखने वाला, गफलत में मत रहना तू,
मन तेरा ही निर्णायक है, कैद में है जीवन माला ।11।

मन पंछी है देह पिंजरा, कब जाने खुलने वाला,
एक-एक पल को लिखता है, बैठा वह ऊपरवाला,
तू ही है इहलोक सुधारक, परलोकों का तू ज्ञाता,
अब करना तुझको निश्चय है, सजी रहे जीवन माला ।12।

रोज है दिनकर आकर दर पर, उम्र चुराने है वाला,
एक-एक दिन घटता जाता, रीता कर जाता प्याला,
खुद को अमर समझने वाला, मद से कौन जगायेगा,
मृत्यु दुल्हन आयेगी जब, मुरझाए जीवन माला ।13।

खुद के पास है रहा न किंचित, आकिंचन पढ़ने वाला,
ज्ञान चरित के बिना है खाली, मद में जो रहने वाला,
बिना गुरु भ्रम जाल में फंसता, अहंकार भी पाला है,
रेत के जैसे बिखर न जाये, तेरी ये जीवन माला ।14।

प्यास लगी है उसको ऐसी, जग का जल पीने वाला,
हाथों की अंजलि से गिरती, बूंद-बूंद क्षण-क्षण हाला,
लेकिन मोह मधु में रहकर, मतवाला हो जाता है,
धर्म सुधा बिन हो जाएगी, खंडित ये जीवन माला ।15।

काया के सब रिश्ते नाते, मन को मोहित कर डाला,
कहीं मित्रता खूब दिखाई, कहीं वैर भरने वाला,
मैला मुख दर्पण के सम्मुख, भीतर की आंखें खोले,
डोर हुई कमज़ोर ज़रा भी, टूटेगी जीवन माला ।16।

सागर की लहरों पर चलता, जलयानों में मतवाला,
खैर खबर न मंज़िल की है, काल व्यर्थ है कर डाला,
धन दौलत भी दे न सकेगी, अंतिम क्षण में भी साँसें,
यम तोड़ेगा ले जाएगा, तेरी यह जीवन माला ।17।

"मैं" की मय से मद में होकर, होश नहीं आने वाला,
चोला हंसों का पहने है, मन सारस है कर डाला,
चेतन को अवचेतन कर फिर, खुद से धोखा करता है,
दुष्कर्मों से होती जाती, भारी यह जीवन माला ।18।

मुखड़े पर मुस्कान लिए जब, आएगी मरणा बाला,
स्वागत कर ले जाये तुझको, होगी फूलों की माला।
वरण किये ले जाएगी पर, जाना कभी न चाहेगा,
लेकिन उसके साथ चलेगा, देकर यह जीवन माला ।19।

तू नहीं होगा वह न होगा, लेकिन जग चलने वाला,
आज जिसे तू अपना कहता, वह भी है जलने वाला।
उगते सूरज को ढलना है, खिले फूल को मुरझाना,
एक दिन कुम्हला जाएगी, खिलती यह जीवन माला ।20।

जीवन का संग्राम यहाँ पर, जीवनभर चलने वाला,
कभी हार तो कभी जीत है, युद्ध न जाता है टाला,
खुद को खुद से ही लड़ना है, खुद से ही है समझौता,
कटना है फिर उठना भी है, जब तक है जीवन माला ।21।

खूब कमाया जोड़ी दौलत, और बनाई धन माला,
लेकिन बिखरी-बिखरी रहती, सबकी अपनी मन माला,
मोल न समझे जब तक अपना, जग बेमोल लगे सारा,
सोना चाँदी हीरा मोती, से बढ़कर जीवन माला ।22।

जीना भी तो एक कला है, सीखा है हँसने वाला,
हर पल को अनमोल समझकर, भाग्य नया है रच डाला।
जो जग में खुलकर जीता है, वो ही जग को है जीता,
श्वांस प्राण औ तन मिलकर ही, बनती है जीवन माला ।23।

जीवन अपना सीप सयाना, मानो तो है गुण वाला,
प्यासा भी रहता है कितना, सागर ने जिसको पाला।
स्वाति के नक्षत्र की बूंदें, जब-जब मुख में गिरती हैं,
तब-तब मोती से है बनाई, श्वेत धवल जीवन माला ।24।

याद करेगी दुनिया उनको, जिसका प्रेम भरा प्याला,
उनको दी ठोकर है जिसने, अहंकार की पी हाला।
चार दिनों के जीवन में हैं, कितना अब हम जी लेंगे,
छोटी होती जाती अपनी, नित्य यहाँ जीवन माला ।25।

बंद हुआ पंखों से पंछी, किस्मत बांध गया ताला,
मन में छायी घोर उदासी, कैद हुआ उडने वाला,
कर्मों ने किस्मत की रेखा, खींच हथेली चला गया,
हाथ न आये हाथ मलेगा, बिखरेगी जीवन माला ।26।

ईश्र्या की लपटों में जलकर, मन को झोंक जला डाला,
फूट-फूट वह दाह करेगा, भीतर द्वेष पडा छाला,
पावन छींटे गंगाजल के, शीतलता कैसे देंगे,
जला-जलाकर कालिख पोती, थी उजली जीवन माला ।27।

तृप्त हुआ न तप्त रहा है, तृष्णा की जलती ज्वाला,
ज्यों-ज्यों अमृत को छोडा है, त्यों-त्यों विशमय कर डाला।
विषनागों के तन पर छोटी, एक खरोंच लपेटी जो,
प्राण हरेगा चींटीदल औ, छीनेगा जीवन माला ।28।

आया है तो जायेगा भी, कौन अमर रहने वाला,
जग चलता है चलता जाये, पानी यह बहने वाला।
सबकी अपनी उम्र यहाँ पर, सबकी एक कहानी है,
लेख लिखी उतनी ही चलेगी, अलग-अलग जीवन माला ।29।

चलते-चलते छूट गये हैं, जिन कदमों को है ढाला,
कितना चलना बाकी है अब, देख रहा चलने वाला।
अलग-अलग राहें हो लेकिन, मंजिल एक सभी की है,
सबकी अपनी-अपनी करनी, अपनी है जीवन माला ।30।

निष्छल मन पर मैल चढाया, और मलिन है कर डाला,
श्वेत कपोतों पर डाला है, कागा रंग भरा प्याला।
करमो की मैली चादर को, धो-धोकर उजली करता,
लेकिन दाग लगी टूटेगी, तेरी यह जीवन माला ।31।

सार्थक उसका ही जीवन है, हितकारी जो मतवाला,
दीपक सम जलकर अपने तल, जिसने अँधियारा पाला।
बाल बुढापा यौवन जिसने, व्यर्थ गुजारा नहीं कभी,
जग में बना नरेन्द्र सभी का, हुई प्रभा जीवन माला ।32।

धूप छाँव के परिवर्तन में, काल सदा अपना ढाला,
सुख-दुख के पहियों से चलकर, खुद को है देखाभाला,
मुस्कानों में एक उदासी, की जब गहरी परतें हों,
उसमें भी ढूँढें खुशियों को, महकाएं जीवन माला ।33।

जीवन एक हलाहल है तो, कभी है अमृत का प्याला,
चलते रहना है मंज़िल तक, ठोकर हो या हो छाला।
हर प्रश्न का मिला है उत्तर, जिसने इसमें खोजा है,
पार कसौटी कर हांसिल की, सुंदरतम जीवन माला ।34।

साँसों का है एक खिलौना, तन अपना ये मतवाला,
अंदर बैठा गिनता रहता, हर दिन जो जाने वाला।
चलते-चलते जब रुक जाए, नर्तन करती ये धड़कन,
मोती-मोती बिखरेंगे फिर, जब टूटे जीवन माला ।35।

नरेंद्रपाल जैन

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - नरेन्द्रपाल जैन
जन्म - 21.09.1974
जन्मस्थान - ऋषभदेव, जिला उदयपुर (राज.)
पिता - श्रीपाल जी जैन
माता - कमला देवी जैन
पत्नी - सुनीता जैन
बेटियां - प्रेरणा, परिधि जैन
मो. - 9785205694
ई-मेल - narendrapaljain@gmail.com
प्रकाशन - मंथन .. एक सोच, मनोभाव, गागर (काव्य संग्रह पुस्तिकायें)
प्यासे नग़मे (काव्य संग्रह)
छः साझा पुस्तकें (काव्य संग्रह) एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक रचनायें प्रकाशित।

सम्मान
1. साहित्य मंच एवं कवि सम्मेलनों के मंच पर विगत 22 वर्षो से सक्रिय।
2. राष्ट्रीय जैन युवा रत्न पुरस्कार मुम्बई।
3. अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मान, श्रवण बेलगोला बैंगलोर।
4. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान और भाषा सारथी सम्मान, इन्दौर।
5. काव्य श्री सम्मान, प्रशासन द्वारा सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार सम्मान, साहित्य गुरु, कवि कुलभूषण, विश्व हिन्दी साहित्य संगठन द्वारा सम्मान एवं अनेकों पुरस्कार।
6. साहित्य श्री सम्मान- जून 2018, शब्द अलंकरण एवं शब्द साधना गौरव सम्मान- जुलाई 2018
7. 'पूर्व राष्ट्रपति' माननीया प्रतिभा पाटिल जी द्वारा कविताओं हेतु आशीर्वाद प्राप्त।
8. शब्द साधना गौरव सम्मान- 2018, शब्द साधना अलंकरण - 2018।
9. अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली में सम्मान 2018।
10. अंतर्राष्ट्रीय मंच बैंकाक में काव्य पाठ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-44-4

मूल्य- 40/-